आज के युग में संगीत शिक्षा में बदलाव की आवश्यकता

डॉ० गीता शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत विभागाध्यक्षा
जैन कन्या पाठ्शाला (पी०जी०) कॉलिज
मुजफ्फरनगर
ईमेलः drgeeta24@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० गीता शर्मा

आज के युग में संगीत शिक्षा में बदलाव की आवश्यकता

Artistic Narration 2022,
Vol. XIII, No. 1,
Article No. 7 pp. 42-48

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xiii-no-1-jan.-june-2022/

सारांश

संगीत कला जिसे ललित कलाओं में प्रमुख व श्रेष्ठतम् माना गया है। एक सम्पूर्ण शास्त्र के रूप में परिलक्षित हुई है। संगीत शिक्षा का अर्थ इसके क्रियात्मक एवं शास्त्रीय रूप के सभी पहलुओं का अध्ययन है अतः इस शिक्षा का विधिवत होना अत्यन्त आवश्यक है।आज जो संगीत का विकसित रूप दिखाई दे रहा हे, वह हमारे पूर्वजों, आचार्यों व कलाकारों के योगदान का प्रतिफल है। वर्तमान समय में शिक्षा और संगीत शिक्षक की स्थिति अच्छी है। समाज में इन्हें प्रतिष्ठा प्राप्त है तथा इसका भविष्य भी उज्जवल है। संगीत शिक्षण व्यवस्था पर व्यवसायिक संगीत संस्थाओं का, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं का, ग्रन्थ पुस्तक, स्वरलिपि का तथा वैज्ञानिक उपकरणों का प्रभाव आज विशेष रूप से देखा जा सकता है। संगीत के संरक्षण एवं प्रचार–प्रसार की दिशा में शिक्षा तंत्र की अहम भूमिका है। शिक्षा के माध्यम से ही प्राचीन काल से आज तक संगीत एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति, एक काल से दूसरे काल, एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त एवं एक देश से दूसरे देश तक पहुंचता और गुजरता हुआ आज हमारे पास एक अनमोल धरोहर के रूप में हस्तांतरित हुआ है। संगीत शिक्षा के स्वरूप में उन्नतीकरण की आवश्यकता विगत 25–30 वर्षों से तीखे रूप में उभरकर सामने आई है। साथ ही आज की शिक्षण प्रणाली से जुड़े हुए कुछ ज्वलन्त सवाल हमारे समक्ष स्वतः उपस्थित होते हैं, जिनपर हमें विचार करना अति आवश्यक है।

संगीत कला जिसे ललित कलाओं में प्रमुख व श्रेष्ठतम् माना गया है। एक सम्पूर्ण शास्त्र के रूप में भी परिलक्षित हुई है। यह कला सर्वस्व नाद पर आधारित है। शास्त्रों में नाद को ब्रह्मा माना गया है तथा मानव के अन्तकरण में भी ब्रह्मा रूप माना गया है। इस प्रकार संगीत व मानव का अटूट सम्बन्ध है परन्तु मानव ने प्रभाविक रूप से निहित इस कला को अत्यन्त विकसित किया, जिसके परिणाम स्वरूप संगीत कला एक सम्पूर्ण विशाल तथा वृहद शास्त्र के रूप में प्रस्तुत हुई, चूंकि संगीत एक क्रियात्मक विषय है अतः इसके क्रियात्मक पक्ष की भी अधिक उपयोगिता है। संगीत शिक्षा का अर्थ इसके क्रियात्मक एवं शास्त्रीय रूप के सभी पहलुओं का अध्ययन है। साधारणतः संगीत शिक्षा का अर्थ शास्त्रीय संगीत की शिक्षा पश्यात् वह अपनी भावनाओं एवं अनुभूतियों को प्रस्तुत करने के योग बन जायें। चूंकि शास्त्रीय संगीत की शिक्षा में नियमों की सीमा में रहकर ही अभिवृत्ति सम्भव है। अतः इस शिक्षा का विधिवत होना अत्यन्त आवश्यक है।[1] भारतीय संगीत पूर्णरूप से मानव निर्मित कला है संगीत का विकास भी मानव विकास के साथ समान्तर गति द्वारा होता आ रहा है। आज जो संगीत का विकसित रूप दिखाई दे रहा हे, वह हमारे पूर्वजों, आचार्यों व कलाकारों के योगदान का प्रतिफल है। प्राचीन काल से वर्तमान समय तक संगीत की शिक्षा के अनेक रूप भारत में प्रचलित रहे। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही संगीत के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में विशेष अन्तर आया। तब से संगीत शिक्षण में भी निरंतर परिवर्तन होते आये हैं। वर्तमान समय में शिक्षा और संगीत शिक्षक की स्थिति अच्छी है। समाज में इन्हें प्रतिष्ठा प्राप्त है तथा इसका भविष्य भी उज्जवल है। संगीत शिक्षण व्यवस्था पर व्यवसायिक संगीत संस्थाओं का, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं का, ग्रन्थ पुस्तक, स्वरलिपि का तथा वैज्ञानिक उपकरणों का प्रभाव आज विशेष रूप से देख जा सकता है।[2]

संगीत के संरक्षण एवं प्रचार–प्रसार की दिशा में शिक्षा तंत्र की अहम भूमिका है। शिक्षा के माध्यम से ही प्राचीन काल से आज तक संगीत एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति, एक काल से दूसरे काल, एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त एवं एक देश से दूसरे देश तक पहुंचता और गुजरता हुआ आज हमारे पास एक अनमोल धरोहर के रूप में हस्तांतरित हुआ है।

संगीत शिक्षा का संक्षिप्त वरन् क्रमिक रूप इस प्रकार है प्राचीन काल में सम्प्रदाय थे, जहां बिना किसी भेद भाव के पुत्र और शिष्य को समान और सम्पूर्ण शिक्षा प्रदान की जाती थी। कालान्तर में इन सम्प्रदायों ने गुरू शिष्य प्रणाली के आधार पर शिक्षा प्रदान करने के लिए 'गुरूकुल' का रूप धारण किया (गुरू शिष्य परम्परा में भी गुरू अपने शिष्य और पुत्र में किसी प्रकार का भेद भाव किए बिना संगीत की शिक्षा दोनों को समान भाव, समान रूप व समान अधिकार से प्रदान करते थे)। मध्यकाल में गुरू शिष्य परम्परा ने घरानों के रूप में मान्यता प्राप्त की। घराने वस्तुतः एक प्रकार के शिक्षण संस्थान ही थे, जोकि पीढी दर पीढी यानी परम्परा के भाव तथा एक विशिष्ट घर की निजी विशेषताओं से युक्त तथा उस्ताद या पंडित के मुखिया अर्थात् घराने के व्यवस्थापक के रूप में स्वीकारोक्ति से ओतप्रोत थे। इन घरानों में प्रायः पुत्र

और दामाद को तो सम्पूर्ण शिक्षा दी जाती थी, लेकिन सामान्य शिष्यों (जिनके साथ रक्त सम्बन्ध नहीं था) को कई बार शिक्षा की बारीकियों से वंचित रखा जाता था। फलतः संगीत शिक्षा आम लोगों की पहुंच से दूर होने लगी। पुनः कालान्तर में परिवर्तन की क्रान्ति हुई और क्रान्ति युग के आस पास संगीत शिक्षा का माध्यम संस्थागत शिक्षण संस्थान हुए।[3]

संगीत की शिक्षा प्रदान करने का जो वर्तमान स्वरूप हमारे सामने है, उसके प्रमुख सोपान छात्र, शिक्षक, शिक्षण पद्धति, प्रशासन (संस्था–प्रशासन व यू0जी0सी0 इत्यादि) एवं संगीत विषय की परीक्षा प्रणाली है। इन पांचों के कर्तव्य निर्वाह, परस्पर समन्वय व सहयोग तथा निजी रूझान एवं संगीत के प्रति वांछित जुनूनी समर्पण के फलस्वरूप जो स्तरीय परिणाम सामने आने चाहिए, वे आज प्रायः दृष्टिगत नहीं हो रहे। फलतः संगीत शिक्षा के स्वरूप में उन्नतीकरण की आवश्यकता विगत 25–30 वर्षों से तीखे रूप में उभरकर सामने आई है। साथ ही आज की शिक्षण प्रणाली से जुड़े हुए कुछ ज्वलन्त सवाल हमारे समक्ष स्वतः उपस्थित होते हैं, जैसे क्या वर्तमान संगीत शिक्षा संगीत के प्रचार प्रसार और संरक्षण का कार्य व्यापक स्तर पर करने में सफल है? कहीं वर्तमान समय में अन्य विषयों के साथ दौड़ और होड़ करते हुए संगीत शिक्षा का सूक्ष्म और साधनामय रूप खो तो नहीं रहा? क्या विद्यार्थी और शिक्षक अपने–अपने दायित्वों का निर्वाह पूर्ण ईमानदारी से कर रहे हैं? क्या संगीत की समग्र शिक्षा के अवसर व संसाधन प्रशासन द्वारा विद्यार्थियों को उपलब्ध ा कराए गए हैं? क्या संगीत के दोनों पक्षों–क्रिया (Prectical) और शास्त्र (theory) की शिक्षा समान रूप से विद्यार्थियों को दी जा रही है? कहीं संस्थाओं में शिक्षक महज औपचारिक सूचनाओं को प्रदान करके ही अपने कर्तव्य की इति श्री तो नहीं कर रहे? कहीं संगीत शिक्षक स्वयं संगीत की शिक्षा देने के अतिरिक्त अन्य अनेक भार प्रभार के नीचे दबते दबते संगीत शिक्षा देने के मूल और निजी उत्तरदायित्व से ही तो धीमे–धीमे दूर नहीं हो रहे? क्या प्रशासन का रिश्ता शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों के साथ समन्वयात्मक है या महज अवसरवादी? क्या परीक्षा प्रणाली विद्यार्थियों की प्रतिभा को बाहर निकालने के साथ साथ उनको वांछित न्याय दिलाने की दिशा में सक्रिय है? इन व ऐसे अनेक सवालों व उनके जवाबों को खोजने के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षा की गुणवत्ता पर विचार किया जा रहा है।[4]

अमेरिकन म्यूज़िकॉलोजिस्ट मॅन्फ्रेड बुकाफ़्ज़र ने दो प्रकार की संगीत शिक्षा का उल्लेख किया है। एक संगीत के लिए शिक्षा (Education for music) और दूसरी संगीत में शिक्षा (education in music) यानी संगीत के प्रति समझदारी पैदा करना एवं व्यावसायिक संगीतज्ञ बनाना। संगीत का मूल प्रयोजन आनन्दानुभूति है और इसे संगीत की ऐसी शिक्षा देकर प्राप्त किया जा सकता है। जो विद्यार्थी के अन्दर छिपी सांगीतिक प्रतिभा को बाहर निकालकर, विद्यार्थी की क्षमता और योग्यता को तराशकर तथा विद्यार्थी की संवेदनशीलता को विकसित करके एवं किसी प्रकार का भेदभाव रक्त सम्बन्ध, रूप, जाति, लिंग इत्यादि का किए बिना विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करें। संगीत की ऐसी शिक्षा ही विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक होगी। साथ ही आनन्दानुभूति की चरम अवस्था तक ले जाने में सफल भी होगी।[5]

ऊपर उठाए गए समस्त सवाल ही वस्तुतः वे कमजोरियाँ हैं, जिनके परिणाम स्वरूप संस्थाओं में संगीत शिक्षा के स्तर का दिन प्रतिदिन ह्रास हो रहा है। यूँ तो यह ह्रास सिर्फ संगीत शिक्षा का ही नहीं है, वरन् सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली के स्तर में एक विशेष गिरावट गत वर्षों से महसूस की जा रही है। पर, संगीत के क्षेत्र में यह बात अधिक चिन्ताजनक है, कयोंकि संगीत मात्र एक विषय नहीं है वरन् हमारी परम्परा है, हमारी ही संस्कृति का हिस्सा है तथा एक साधना है, इसलिए इसके शिक्षार्थियों को मिलने वाली शिक्षा में आने वाली गिरावट का अर्थ है संस्कृति, शिक्षा, संस्कार और परम्पराओं का ह्रास होना। साथ ही आने वाली पीढी के व्यक्तित्व में से संवेदनशीलता व इंसानियत का समापन होना। इन कारणों से संगीत की शिक्षा प्रणाली के उन्नतीकरण की आवश्यकता सर्वोपरि है। आज संगीत से जुड़े तीनों वर्गों (विद्यार्थी वर्ग, शिक्षक वर्ग, प्रशासन वर्ग) के लिए संगीत की शिक्षा प्रणाली के क्षेत्र में सक्रिय रूप से गुणवत्ता लाना सबसे बड़ी चुनौती है। संगीत शिक्षा में जो गिरावट निरन्तर बढ़ रही है, उसके कारणों का उल्लेख प्रासंगिक है।

विद्यार्थी की मानसिकता शॉर्ट कट से जुड़ गई है। जल्दी से जल्दी परन्तु अधिक से अधिक लोकप्रियता हासिल करने की होड़ ने उसे सूक्ष्म यानी गुणपरक शिक्षा से दूर किया है। विद्यार्थी संगीत की शिक्षा प्राप्त करने के अतिरिक्त भी और कई क्षेत्रों में अपनी जगह बनाने के कारण संगीत शिक्षा को पर्याप्त समय व रूझान नहीं दे रहा है। दूरदर्शन पर दिखाई देने की चकाचौंध ने शिक्षार्थी में एक ऐसी मानसिकता का विकास किया है, जिसके तहत क्रमिक शिक्षा लेते हुए नींव मजबूत करने व स्तर बढ़ाने के बजाय शिक्षार्थी कम समय में प्रदर्शनात्मक शिक्षा हासिल करना चाहता है। जल्दी से जल्दी लोगों द्वारा पहचाने जाने की हुलस संगीत की वास्तविक शिक्षा प्राप्त करने की दिशा से शिक्षार्थी को दूर ले जा रही है।

विद्यार्थीयों को यह समझना होगा कि संगीत का संबंध मन की ही क्रिया से है और मनोविज्ञान मन का विज्ञान हैं।[6] इस प्रकार संगीत का सीधा सम्बंध मनोविज्ञान से हैं।

साइकोलाजी शब्द यूनानी भाषा के साइकि और लोगोस शब्द के योग से बना हैं। यूनानी भाषा में साइकि का अर्थ आत्मा से हैं और लोगोस का सम्बध ज्ञान से हैं। अतः शाब्दिक अर्थ आत्मा का विज्ञान या ज्ञान हैं।[7]

मनोंविंज्ञान को अन्तः चेतन का विज्ञान भी कहा हैं। विलियम जेम्स के अनुसार मनोविज्ञान की सर्वोत्तम परिभाषा चेतना की दशाओं के वर्णन के रूप में दी जा सकती हैं।[8]

मनोविज्ञान को चेतन का विज्ञान भी कहा गया हैं। विलियम जेम्स के अनुसार मनोविज्ञान की सवोंत्तम परिभाषा चेतनख की दशाओं के रूप में दी जा सकती हैं।[9]

मनोविज्ञान को व्यव्हार का विज्ञान भी कहा गया हैं। वाटसन के अनुसार - It is possible to write a psychology, to define it as the science of behavior.[10]

मनोविज्ञान में मन के अंत पटल का विशेष युक्तियों द्वारा विश्लेषण करना मनोविश्लेषण कहलाता हैं। गार्डनर मरक्वी की मनोविश्लेषण की परिभाषा में बतलाया हैं- "Technique for

investigating the mental life of a person by means of an analysis of his dreams, his free associations and his blunders".[11]

इस प्रकार संगीत का मन से मनोस्थिति से मस्तिष्क से सम्बध हैं जोकि मनोविज्ञान से हमें जोंडतें हैं। मन जो व्यक्तित्व के केन्द्रीय बिंदु हैं।[12]

बदलते परिवेश में पुरानी गुरूकुल शैली, जोकि 'सादा जीवन उच्च विचार' पर आधारित थी, प्रायः लुप्त हो गई है। लतः संगीत सिर्फ जीविकोपार्जन का माध्यम ही न रहकर वर्तमान युग के समस्त भौतिक संसाधनों को एकत्र करने का जरिया बन गया है। यह एक बड़ा कारण है, जिसके तहत शिक्षक विद्यार्थियों को वह समय और एकाग्रता नहीं दे रहे जो उनके सर्वांगीण विकास हेतु वांछित है। संस्थानों में संगीत शिक्षक के ऊपर शिक्षा देने के अतिरिक्त भी अनेक प्रकार के ऐकडमिक कार्य भार, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के संचालन संयोजन का दायित्व तथा विभिन्न समितियों के कार्यों के संचालन का दबाव भी रहता है। इन कार्यों को करते हुए शिक्षक का इतना अधिक श्रम व समय खर्च हो जाता है कि विद्यार्थियों और शिक्षक के बीच एक बड़ा गैप आ जाता है। फलतः विद्यार्थी का शिक्षक के प्रति अटूट सम्मान का भाव और शिक्षक का अपने विद्यार्थी के लिए संतान भाव जैसा लगाव पैदा न हो पाने की वजह से संगीत की शिक्षा एक साधारण विषय की शिक्षा के तौर पर प्रेषित होती है, साधनामय विषय के रूप में नहीं।

प्रशासन वर्ग प्रवेश से लेकर परीक्षाओं तक की प्रक्रिया में वर्ष भर संचालन व्यवस्था के बाह्य रूप में उलझकर रह गया है। विद्यार्थियों को आवश्यक सुविधा संसाधन उपलब्ध कराना, संगीत विषय के प्रति उसकी रूचि जाग्रत कराना, तथा उसकी प्रतिभा को बाहर निकालने के अवसर देने जैसी नैतिक जिम्मेदारियों के एहसास से प्रशासक वर्ग धीमे–धीमे दूर हो रहा है। प्रशासन और शिक्षक के बीच, प्रशासन और विद्यार्थी के बीच किसी प्रकार का स्वस्थ सम्बन्ध स्थापित नहीं हो रहा है, बल्कि इन रिश्तों के बीच एक रिक्त्ता पनप रही है। संस्थाओं में विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता के जरूरी वाद्ययंत्र उपलब्ध नहीं है, संगीत सुनने की व्यवस्था हेतु श्रवण कक्ष सी0डी0 प्लेयर इत्यादि उपलब्ध नहीं है, ज्यादातर संगीत विभागों में आज भी कम्प्यूटर, इंटरनैट की व्यवस्था नहीं है। संगीत का विद्यार्थी न तो नई तकनीक का संगीत के क्षेत्र में प्रयोग कर पा रहा है और न अच्छा शास्त्रीय संगीत सुन पा रहा है, फलतः संगीत शिक्षा अन्य विषयों की तुलना में पिछड़ रही है।[6] संगीत शिक्षा के वर्तमान स्वरूप में उन्नतीकरण की जरूरत आज स्वतः सिद्ध है। अब कारण भी स्पष्ट है। प्रासंगिक यही है कि मात्र कारणों को कहकर ही अपने कर्तव्य की इतिश्री न समझी जाए, अपितु उन उपायों को भी खोजकर सामने लाया जाए, जिन्हें अपनाना संगीत शिक्षा की उन्नति की दिशा में सहायक सिद्ध हो। संगीत शिक्षा को नियत समयावधि में न बांधकर हर वक्त, हर जगह तैयार रहने की मानसिकता से सर्वप्रथम शिक्षक जुडे। तदनुसार सिर्फ पाठ्यक्रम ही पूरा कराने मात्र के उद्देश्य से आगे बढकर संगीत शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों को संगीत विषय

की सूक्ष्म शिक्षा देनी होगी, साथ ही विद्यार्थियों के आन्तरिक गुणों का विकास भी करना होगा। केवल मात्रा आधारित शिक्षा पर यानी अधिक मात्रा में सिखाने पर बल न देकर विषय की गुणवत्ता का भी ध्यान रखना जरूरी है। अर्थात् संगीत से जुड़े विद्यार्थियों को समयपरक व गुणपरक शिक्षा प्रदान करना आवश्यक है। साक्षरता अभियान वाले सूत्र एक पढाए पांच को संगीत के शिक्षा क्षेत्र में लागू करके कम से कम एक सिखाए दो के मन्त्र पर बढ़ते हुए संगीत का प्रचार प्रसार अधिकाधिक सम्भव है। लुप्त होते वाद्य, लुप्त होती संगीत की परम्पराएं तथा लुप्त हो रही पाण्डुलिपियों (संगीत के अप्रकाशित ग्रन्थों) के संरक्षण तथा उनके परिचय को सामने लाने की दिशा में कार्य किया जाए। संगीत के शास्त्र पक्ष की शिक्षा भी उतनी ही जरूरी है, जितनी कि क्रिया पक्ष की। अतः दोनों पक्षों पर समान रूप से ध्यान देने की जरूरत है। संगीत को गम्भीरता से सीखने और समझने के इच्छुक और जागरूक विद्यार्थियों को एकत्र करके शिविर का आयोजन किया जाए, जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी परस्पर एक दूसरे की प्रतिभा को नजदीक से पहचानें तथा शिक्षक विद्यार्थी की उस प्रतिभा को बाहर निकाल कर तराशें। संगीत की उपरी व स्थूल शिक्षा बी0ए0 स्तर तक तो ठीक है, तदुपरान्त संगीत की बारीकियाँ और सूक्ष्म ज्ञान शिक्षा का हिस्सा होना चाहिए। यानी व्यापक स्तर पर संगीत विषय को सीखने, समझने व समझाने का रूझान जरूरी है।

हर स्तर से विद्यार्थी में संगीत सीखने के प्रति लगाव, अभ्यास द्वारा साधना करने के प्रति ललक व समर्पण पैदा करने के प्रयास निरन्तर करने होंगे। संगीत शिक्षा के क्षेत्र में संगीत श्रवण की बहुत बड़ी भूमिका है। इस बात को समझकर प्रशासन को इलैक्ट्रॉनिक संसाधन जैसे सी0डी0 प्लेयर, कैसेट्स रिकॉर्डर, कम्प्यूटर, इंटरनैट इत्यादि संगीत विभागों को उपलब्ध कराने चाहिए। यू0जी0सी0 द्वारा अच्छे व अनुभवी लेखकों का आह्वान करके ऐसी पुस्तकों की रचना करानी होगी, जो सरल भाषा में होने के साथ उच्च कोटि की प्रमाणिक सामग्री से युक्त हो। क्योंकि अच्छी पुस्तकों की रचना का कार्य किसी भी विषय की शिक्षा व शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण अंग है। विद्यार्थी अच्छा लेखन पढ़ेगा तो उसकी विषय के प्रति आस्था बढेगी।

अंतः किसी एक के प्रयास से इतना बड़ा विकास सम्भव नहीं है। जितना बड़ा संगीत का साधना–क्षेत्र है, जितनी पुरानी इस साधना की जड़े हैं, जितना व्यापक सम्पूर्ण भारत में फैला इसका कार्य क्षेत्र है, उतने ही युद्धस्तर पर ऐसे गहन, सूक्ष्म और साधनामय विषय की शिक्षा की उन्नति हेतु शिक्षकों को कई कदम अपने खोल से निकलकर आगे आना होगा। और, उतने ही कदम विद्यार्थी को बढ़ाने होंगे, साथ ही कुछ सहयोग व समन्वयात्मक रवैया संस्था प्रशासन को भी अपनाना होगा।

युवांओं में वर्तमान समय में बढ़ती हुयी समस्या तनाव अवसाद बेरोजगारी तनाव निराशा मानसिक विकार इत्यादि है। आज का आने वाला युवा वर्ग विभिन्न मानसिक विकारों की ओर अग्रसर हो रहा हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. सक्सैना, डॉ0 मधुबाला. भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर।
2. दत्ता, डॉ0 पूरन. भारतीय संगीत शिक्षा और उद्देश्य।
3. चौबे, अमरेश चन्द्र. संगीत की संस्थागत शिक्षा प्रणाली।
4. पुरी, डॉ मृदुला. संगीत मीमांसा।
5. ऋषितोष, डा0 कुमार. संगीत शिक्षण के विविध आयाम. कनिष्ठ पब्लिशर्स।
6. मिश्र, लालमणि. भारतीय कंठ संगीत एंव वाद्व संगीत।
7. www.google.com/sarsh
8. भारतीय कंठ संगीत एंव वाद्व संगीत. पृष्ठ **100.**
9. James, W.M. (1890). Phychology of phychology. Macmillan. V-I.
10. Wastson, J.B. In behavior- an introduction to comparative phychology. Pg. **121.**
11. Gardner. An introduction of phychology.
12. तिवारी, डॉ किरन. संगीत एंव मनोविज्ञान. पृष्ठ **183.**
13. शर्मा, प्रो0 स्वतंत्र. सौन्दर्य रस एवं संगीत. प्रतिभा प्रकाशनः नई दिल्ली।